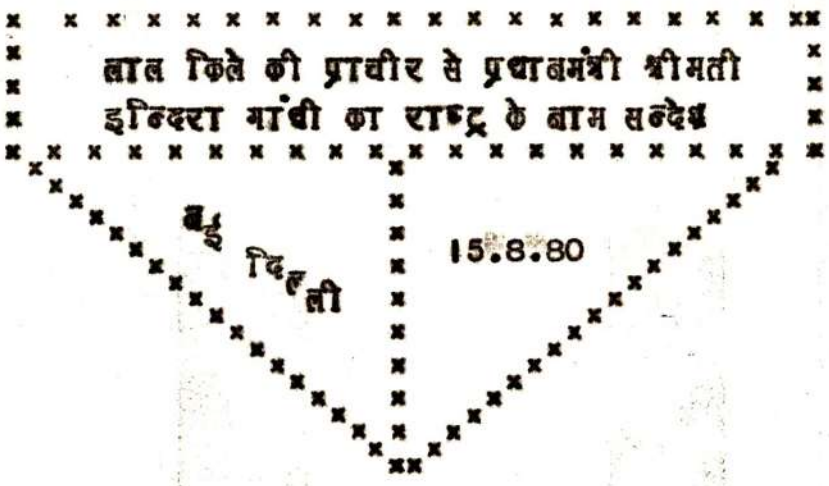

भाईयो और बहनो,
भारत के प्यारे देशवासियो,

कुछ वर्ष बाद मुझे फिर से यह गौरव प्राप्त हुआ है कि इस ऐतिहासिक स्थान पर अपने प्यारे झंडे को फहराऊं । यह खुशी का अवसर होना चाहिये था, लेकिन मेरा दिल दुख से भरा है । जो घटना यहां से बहुत दूर नहीं, मुरादाबाद में हुई है, उससे हमारे देश को चोट लगायी है । हमारी सहानुभूति उन सब परिवारों के संग है जिनके लोग मरे है, या चोट लगी है या किसी प्रकार की हानि हुई है । मैं आप सबके तरफ से उनको सहानुभूति देती हूं और यही कह सकती हूं कि जिसने भी शरारत की या दोषी है - चाहे सरकारी हो चाहे गैर सरकारी हो - उसको सख्त से सख्त सजा मिलेगी । लेकिन संग-संग मैं आप सबसे अनुरोध करती हूं कि ये जो साम्प्रदायिकता की भावना, जातिवाद की भावना या बदले की भावना, इसको हम फैलने नहीं दें । सब का कर्त्तव्य है शहर और गांवों में कि अपनी पूरी ताकत अमन और शान्ति रखने में लगायें । ये जहर फिरकापरस्ती का बहुत बरसों से हमारे समाज में रहा है । हमारा ख्याल था कि गांधी जी की कुर्बानी से हम लोगों ने इसको कुछ दबाया था । लेकिन हम देखते हैं कि किस आसानी से वो फिर से उभर पड़ता है ।

मुझे तो आप जानते हैं । बहुत बचपन से यही शिक्षा मिली, यही सिखाया गया कि जो देश के कमजोर तबके हैं - चाहे वो संख्या और तादाद के कारण हों - चाहे वो गरीबी केया किसी दूसरे प्रकार के पिछड़पने के - उनकी तरफ विशेष ध्यान देना है । उनकी सुरक्षा करना, उनकी सहायता करना, उनको ऊपर उठाना, ये हमारा प्रथम कर्त्तव्य है ।

.....2/-

क्योंकि तभी हमारे समाज में शान्ति हो सकती है। तो इस काम में हम सबको लगना है। हमें सोचना है कि क्यों ये सब बातें जो कुछ दब गयीं थीं, कुछ काबू में आयी थीं, ये खासतौर से पिछले तीन बरस में क्यों ऊपर उठ कर आई हैं। साम्प्रदायिकता तो है ही है, जातिवाद किस जबरदस्त तरह से ऊपर हुआ है और कैसे एक साजिश है, एक कोशिश है कि हर समय हर बात पर आन्दोलन हो, लड़ाई-झगड़ा हो, हिंसा हो, काम न चलने पाये। हिंसा, अराजकता सारे देश में फैली है। इसको हम नहीं रोक पायेंगे तो हम कुछ भी काम न कर सकेंगे। ये तो वैसे है जैसे नदी अपनी किनारे को फाड़ कर इधर-उधर हो जाये। न वो पानी उपयोगी होता है न उसकी ताकत रहती है और नुकसान ही नुकसान पहुंचाता है। ये हालत आज हो गयी है और क्योंकि ऐसे तबकों को प्रोत्साहन दिया गया था तो एक वातावरण देश में फैला कि जिसको जो मिल सकता है उसको लें। हमें मालूम है कि गरीब करीब और पिछड़े देश में हरेक की मांगें होती हैं। वो ठीक मांगें भी होती हैं। उनको जरूरत भी उन चीजों की है। लेकिन प्रश्न यह है कि वो मांगें किस तरह से उठायें। क्या आन्दोलन से, इस मांग से कि जब दूसरों को उसका बोझ पड़े तो देश आगे बढ़ सकता है? और अगर देश नहीं आगे बढ़ सकता है। तो वो मांग भी कब तक संतोष दे सकती है।

अराजकता को हमें रोकना है। हमको देखना है कि जो कमजोरियां आ गयी हैं और कमजोरी हर स्तर पर आई है। केवल समाज में नहीं, केवल नौजवानों में या कुछ दूसरे तबकों में नहीं, सारे समाज में, सारे शासन में, हर जगह हम देखते हैं कि जो एक अनुशासन आया था, एक भावना थी कि मिल के निष्ठा से हम आगे बढ़ें, कुर्बानी करें, सेवा करें, वो जाती रही है। लोग कहते हैं कि इतने महीने हो गये, काम नहीं हुआ है। लेकिन जब पानी ऐसे बिखर जाता है तो क्या वह आसानी से फिर से बटोर सकते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहती हूं कि मेरी पूरी कोशिश है कि किस प्रकार से हम इस शासन में सुधार लायें जिसमें यह निष्ठापूर्वक, राष्ट्र-भावना के संग, हिम्मत से, तेजी से अपना काम कर सकें और जो भ्रष्टाचार बढ़ा है और मैं कह सकती हूं कि मैं तो आ के दंग हो गयी कि कितना भ्रष्टाचार बढ़ा है – हर जगह पर किस तरह से इसको जड़ से निकाला जाये। चाहे वो अवसरवादी हो।

हो, चाहे राजनीतिक उसमें हों, चाहे बड़ा हो, छोटा हो – किसी स्तर पर, किसी प्रकार का, इसको हमको थामना है जोरों से, जिसमें देश के ये जो औजार हैं काम करने के, नीति पूरा करने के, वो हमारे तेज हों और वो इन कामों को आगे बढ़ायें ।

जो हमारी सर्विसेज हैं, जिनको देश, समाज की रक्षा करनी चाहिये वो किस तरह से उस रक्षा के, करने के लिए और मजबूत हों अपने लोगों के विश्वास प्राप्त कर सकें, उनकी मैत्री प्राप्त कर सकें । सबसे बड़ा काम हमारे सामने यह है । आपकी क्या कठिनाईयां हैं वह हमसे छुपी नहीं हैं । आसाम का प्रश्न । एक जबरदस्त आन्दोलन वहां चल रहा है । वहां के जो बच्चे हैं, विद्यार्थी हैं, मेरे बच्चों के बराबर हैं, मैं उनको समझती हूं । उनसे मेरी सहानुभूति है और हमारी पूरी कोशिश है कि जो उनके कष्ट हैं और उनमें सच्चाई भी है, गहराई भी है, वो किस तरह से वो दूर हों । लेकिन उनसे भी मैं कहूंगी कि यह तरीका नहीं है कि सारे देश को धमकी दें कि सारे देश को हानि हो ।

मुझे विश्वास है कि वहां जो कुछ थोड़े से तबके हैं संख्या में कम, लेकिन साजिश बड़ी गहरी । जो चाहते हैं कि इस आन्दोलन का या कोई भी आन्दोलन कहीं पर हो, उसका नाजायज फायदा उठायें । कहीं पर समाज विरोधी तबके उठ जाते हैं । कहीं पर देश विरोधी तबके उठ जाते हैं । उनका असर चाहे ज्यादा न हो, लेकिन वो भी एक जहर है जिसको जड़ से न निकाला जाये तो वो फैल के भारी हानि पहुंचा सकता है । तो मुझे विश्वास है कि चाहे आसाम के लोग हों, चाहे कहीं और के, इस जहर को फैलने नहीं देंगे और जोरदार उसका आन्दोलन करेंगे । जोरदार आन्दोलन उनका हो चाहे न हो, लेकिन ऐसी भावनाओं का वो जोरदार मुकाबला करेंगे ।

कीमतें बढ़ी हुई हैं । हमारे लोगों को क्या कष्ट हैं और विशेषकर गृहिणी को मेरी बहनों के ऊपर कितना बोझ है उसका मुझे पक्का अंदाज है । लेकिन आपको उसके कारण भी मालूम हैं । किस प्रकार से बढ़ी । कुछ चीजों पर तो हमें काबू नहीं है । तेल है, डीजल है, खाद आदि लेकिन दूसरी चीजें काबू में आ सकती हैं । अगर आन्दोलन होंगे, अगर सारा रुपया समाज को संभालने में जायेगा, लोगों की मांगें पूरी करने को जायेगी तो कैसे कीमते कम होगी। हम आप सब से विनती करते है।

सारे समाज से. बहनों और भाईयों से. बड़े और छोटों से कि ये जिम्मेदारी इसकी उसकी थोड़ी उसके ऊपर भी है ।

इस वक्त व्यापारियों की जिम्मेदारी तो है ही है कि लोगों की कठिनाई का. बाजायज फायदा. उसकी लाचारी का फायदा. वो उठाने की कोशिश न करें । लोगों की - महिलाओं की और पुरुषों - की जिम्मेदारी है कि वो जो गैर जरूरी चीजें नहीं खरीदें । अपने-अपने स्थान पर. अपने-अपने जगह देखें क्या कार्रवाई वो कर सकते हैं जिसमें कोई गलत काम हो रहा है - चाहे राज्य आप ठीक से न चल रहीं हैं या लोग दाम वैसे ही बढ़ा रहे हैं । उसमें वो क्या कर सकते हैं । मैं उसको विश्वास दिलाती हूं कि सरकार इसमें पूरा उसका साथ देगा । लेकिन जब तक ये पूरी मदद देश की नहीं मिले तो ये जो बुराई फैल गयी है ये आसानी से नहीं होगी । साथ ही साथ कोई ऐसा प्रश्न नहीं है जिसको हम सुलझा नहीं सकते हैं आपकी सहायता से । अगर पहले हमने काम कर के दिखाये थे तो इसलिए नहीं कि कोई ऊपर से ताकत टपकी थी । इसलिए कि आपकी ताकत हमारे साथ थी. आपकी ताकत को हम बांध सके थे. उसको हमने बिखरने नहीं दिया । इसलिए वो जबरदस्त काम हम और आप मिल के कर सके । अगर खेती का उत्पादन बढ़ा. उपोग का उत्पादन बढ़ा तो भारत के लोगों ने अपनी मेहनत. अपने पसीने से उसको बढ़ाया है । एक वो भावना आज हमको काम करने की. परिश्रम करने की भावना फिर से हमें आगे बढ़ानी है ।

भारत के किसान हमारी रीढ़ की हड्डी हैं । उसके बिना देश जीवित नहीं रह सकता । आत्मनिर्भरता की तरफ हम नहीं जा सकते । वो उसको भी कष्ट है बढ़ती हुई कीमतों से. कुछ चीजों की कमी से । हमारी पूरी कोशिश है कि हर प्रकार से उसकी हम सहायता करें । इस वर्ष पिछले वर्ष के मुकाबले सूखे के बाद कुछ अभी तक वर्षा अच्छी पड़ी है । उससे कुछ राहत आयेगी । संग ही संग जहां कुछ लोगों को लाभ है . कुछ को नुकसान भी है । बाढ़ आया है । बाढ़ पीड़ित लोगों को भी मैं सहानुभूति अपनी देती हूं । कृषि का उत्पादन हर प्रकार से हमें बढ़ाना है । जिसमें हमारी जरूरतें पूरी हों. हमारे देश की. दूर-दूर की जगह - चाहे पहाड़ हों. चाहे जंगल हों. चाहे रेगिस्तान हों - वहां तक हम अनाज और आवश्यकतायें लोगों को पहुंचा सकें ।

इसी प्रकार आधुनिक देश की बुनियाद उसके मजदूर होते हैं। हमारे कारखाने चलेंगे हमारा औद्योगिक पैदावार बढ़ेगा तभी जा के हम कृषि की सहायता कर सकते हैं, तभी जा के इस देश को शक्ति हम दे सकते हैं। हमारे सामने कोई एक-आध प्रश्न नहीं है। आर्थिक कष्ट केवल भारत का आज नहीं है। सारी दुनिया में, बड़े से बड़े देश में, यही कष्ट दिखलाई पड़ते हैं। लेकिन ये हमारे लिए कोई बहाना नहीं है। न कोई एक देश या कई देश मिल के हमको अधिक मदद कर सकते हैं। हमें अपने पैरों पर खड़ा होना ही है, आत्मनिर्भरता की तरफ इस देश को जाना ही है और मैं समझती हूं कि जो ये अनुशासनहीनता बढ़ी है, जो ये स्वार्थ बढ़ा, इसका एक बड़ा कारण यह है कि हमने अपना परखा हुआ, जाना हुआ रास्ता छोड़ दिया था इन पिछले 3 साल में। क्योंकि हमारी बुनियादी जो नीति थी, जिन आदर्श को देख के हम आगे बढ़ रहे थे, उसकी हंसी-मजाक होने लगी और नये रास्ते ढूंढने की कोशिश हुई। कोई एक रास्ता मिलता तब भी समझते लेकिन कई रास्तों पर लोग बिखर गये। ये कारण था कि वो जो सब संग बंधे थे, वो टूटे, बिखरे और रफ्तार हमारी सुस्त हो गयी।

खतरा देश के भीतर तो रहता ही है। जहां भी गरीबी और पिछड़ापन रहता है, आज देश के बाहर भी जबरदस्त खतरा है। हमारे चारों तरफ क्या हालत है, आप लोगों से छुपी नहीं है। किस प्रकार से हथियार जमा कर जा रहे हैं। पहले हम सोचते थे कि खतरा कुछ एक-दो दिशा से ही आता है। लेकिन अब सारा इतना विशाल समुद्री क्षेत्र भी हर तरह के नौसेनाओं से भरा हुआ है। हर तरह की शक्तियां वहां पर उठ खड़ी हो रही हैं। तो हमारे लिए खतरा बहुत बड़ा है।

हमारी नीति हमेशा मैत्री की रही है और रहेगी। हमारी नीति है कि हम दोस्ती का हाथ - खासतौर से अपनी पड़ोसी देशों की तरफ बढ़ायें। हमारी चाहे सरकार हो और चाहे भारत के लोग हों, वो अच्छी तरह से समझते हैं कि झगड़े से उनको कुछ मिलने वाला नहीं है। सहयोग से, दोस्ती से, सब अपने-अपने समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। एक-दूसरे की मदद कर सकेंगे और जो असली हमारे दुश्मन बाहर के जो हो सकते हैं, जो हम पर असर डालना चाहते हैं, हमको हिलाना चाहते हैं, हमें ताकतवर नहीं बनने देना चाहते हैं, उनका मुकाबला हम सब मिल के करेंगे। हथियार से नहीं, लड़ाई से नहीं, लेकिन अपनी मजबूती से, अपनी

स्थिरता से, अपनी एकता से, अपने आदर्शों से । ये हम चाहते थे कि इस सारे उपद्वीप में और उसके आगे के देश भी सब संग मिल कर रहें तो यह हम कर के दिखा सकेंगे । लेकिन ये तस्वीर भी चिटक गयी । फिर से एक-दूसरे का मुकाबला हो रहा है ।

हमने तो पहले भी कहा है कि कोई भी देश और खासतौर से भारत जैसा देश जिसको अपने पैरों पर खड़ा ही होना है, जो इतना बड़ा है कि कोई उसकी मदद कर नहीं सकता चाहे, चाहे भी । थोड़ी सी मदद कर सकते हैं । लेकिन हम गिरें तो हमें कोई उठा नहीं सकता । हमें खुद उठना है । तो ऐसे देश को अपनी सुरक्षा की तरफ देखना ही है । वो किसी दूसरे पर निर्भर रह नहीं सकता और इसीलिए हम न एक देश की तरफ झुकते हैं, न दूसरे देश की तरफ, नएक गुट की तरफ न दूसरे गुट की तरफ । हम भारतीय हैं, हमें भारत की चिन्ता है । भारत के काम में हम लगे हैं और जो भी हमारी नीति है, जो भी हमारी दिशा है जो भी हम काम करते हैं, कार्यक्रम उठाते हैं, वो केवल इस दृष्टिकोण से कि भारत के लोग कैसे मजबूत हों, इस देश को कैसे हम गरीबी और पिछड़ेपन से ऊपर उठायें । यही हमारे लोगों की इच्छा है ।

मैं पड़ोसी देश के लोगों को यह भरोसा देना चाहती हूं कि हमारे लोग उनसे दोस्ती चाहते हैं, हम लड़ाई नहीं चाहते हैं । हमें मालूम है कि हर बात में एक राय नहीं हो सकती है । मतभेद जरूर होगा/ जैसे कि वो इंसान में भी होता है । लेकिन जहां भी हम एक राय के हो सकते हैं वहां हम एक-दूसरे की मदद करें, एक-दूसरे से मिल के चलें । जो एक-दूसरे का जो सहयोग कर सकते हैं, सहायता कर सकते हैं, वो करने को हम अगर तैयार हों, तो बहुत कुछ हमारा खर्चा भी कम हो सकता है और हमारी ताकत भी बढ़ सकती है । लेकिन अगर हमको लोग धमकी देंगे तो उसके लिए हम तैयार हैं ।

आपको मालूम है । यहां भी हमारे सामने बहादुर हमारे जवान, तीनों सेना के हैं । उनकी जितनी भी प्रशंसा करें वो काफी नहीं है । चाहे लड़ाई का जमाना हो, चाहे शान्ति का जमाना हो, देश की और लोगों की सेवा में वो बराबर लगे रहते हैं । हमारा कर्तव्य है कि हम जो भारत के नागरिक हैं, हम भी एक प्रकार के सिपाही हैं, चाहे हम वर्दी न पहने हैं । हमारा फर्ज है कि हम अपनी एकता से वे अपनी फौजों

मेरे सामने बहुत से भारत को होनहार बच्चे बैठे हैं। कैसा भविष्य हम इनके लिए बनाना चाहते हैं, वो भविष्य के लिए आज हमें काम करना है। अगर हमारे नौजवान या हमारे किसान और मजदूर या हमारे मध्यम वर्ग, या हमारी गृहिणी या हमारे दूसरे पेशे करनेवाले लोग, अगर ये आज की चिन्ता में फंस जाते हैं, आज के संकट में फंस जाते हैं, आज के कांटें और रोड़ों में से निकल नहीं सकते हैं, अगर×के×संकट×में×फंस×जाते×हैं तो यह यात्रा पूरी कैसे होगी। हम आगे कैसे बढ़ेंगे। बहुत से लोग शायद लगभग 28 करोड़ हैं जो आजादी के बाद पैदा हुए हैं। जिनको कल्पना भी नहीं है कि आजादी से पहले क्या भयंकर गरीबी इस देश में थी, क्या अभाव होता था भारतीय नागरिक का, हमारे वर्ग का, हमारी सभ्यता का। किस प्रकार का परिवर्तन, एक चमत्कार परिवर्तन, इन वर्षों में हुआ है। हमारे सब समस्यायें ठीक नहीं हुई हैं। लेकिन एक-एक करके बहुत सी समस्यायें ठीक भी हुई हैं। और ठीक हो सकते हैं अगर आप सबका साथ और सहयोग मिले।

अब के जब हमारी सरकार बनी तो मैंने कहा था कि हम जो हो चुका है उसको भूलें, हम फिर से सब एक होने की कोशिश करें। हमारी नीतियां जुदी होंगी और उनको एक नहीं कर सकती हैं। लेकिन देश के बनाने के काम में रोड़े कोई नहीं डाले।

जम्हूरियत, लोकतंत्र चल सकता है जब सरकार और विरोधी दल एक-दूसरे को स्वीकार करें और सब मिल के काम करने की कोशिश करें। इसके माने नहीं कि कोई विरोध करने का अधिकार नहीं है। वो तो डेमोक्रेसी में मिलता ही है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिये कि बीच में कोशिश हो कि काम रुक जाये। काम के रुकेगा तो सरकार को हानि होती है या लोगों को हानि होती है और लोगों को होती है तो सबसे ज्यादा तो गरीबों को होती है, सबसे ज्यादा तो महिलाओं को होती है। स्कूल-कालेज चलेंगे नहीं तो किस की हानि है। उन बच्चों के जिनके वो पैसा जाया जा रहे हैं पढ़ाई के। तो यह सब सोच के समय आया है। यह समय है। यह समय एक मोड़ पर है हमारा देश। इस वक्त हम सब कुछ पा सकते हैं अगर ठीक रास्ते पर गये और अगर यह मौका हमने नहीं लिया दोनों हाथों से, तो सब कुछ खो भी सकते हैं। यह जिम्मेदारी सरकार की जरूर है लेकिन उतनी ही विरोधी दलों की है। उतनी आप सब जो भारत के नागरिक हैं उनकी है।

अगर इन प्रश्नों को आप समझते हैं और हम सब जैसे पहले अनुशासन और एकतापूर्वक आगे बढ़ रहे थे। अपना ख्याल नहीं कर रहे थे, अपनी मांगों को आगे नहीं कर रहे थे। क्या मांगें उस वक्त नहीं थीं, आजादी की लड़ाई में क्या कष्ट नहीं था ? तब तो बीकरियां भी नहीं थीं, कोई सामान भी नहीं मिलता था सिवाय थके जाते थे हर जगह, अपनी रेलों में आराम से बैठ नहीं सकते थे। लेकिन गांधी जी ने इन सब दबे हुए, अनपढ़ डरे हुए लोगों से एक जबरदस्त शक्ति बनाई जिसने दुनिया को हिला दिया। वो शक्ति आज हमारे पास है। थोड़ासाहिस्सा उसका यहां दिल्ली के लाल किले के सामने बैठा है और बाकी विशाल जनता भारत की, सारे भारत के कोने-कोने में ऐसी है। एक जबरदस्त शक्ति है। ऐसी शक्ति है ऐसी सभ्यता की शक्ति है, ऐसी समझदारी की शक्ति है कि शायद ही किसी दूसरे देश में हो। क्या इस शक्ति को हम खो देंगे। ये एक रत्न जो हमारे हाथ में है, इसको ऐसे ही फेंक देंगे, ये आपको सोचना है।

भारत को हमें महान बनाना है, भारत को हमें शक्तिशाली बनाना है। हम दुनिया से कुछ नहीं चाहते हैं, हम चाहते हैं -अमन या शक्ति। हम चाहते हैं अपनी आजादी मजबूत करना, हम चाहते हैं अपने देश में सच्ची जम्हूरियत, सच्चा लोकतंत्र हो जो थोड़े से लोगों के लिए नहीं, लेकिन गरीब से गरीब चाहे मत देने का प्रश्न हो, चाहे पेट भर कर खाने का प्रश्न हो, चाहे बीकरी का प्रश्न हो और चाहे उसकी इज्जत का प्रश्न हो। ये चीजें हम चाहते हैं अपने देश के लिए और ये सब हम दे सकेंगे तभी हम कह सकेंगे कि वो जो प्रण हमारे महान नेताओं ने किया जो जवाहरलाल नेहरू ने पहले दफे इस झंडे के नीचे इसीजगह से किया और वो स्वप्न जो गांधी जी ने हमें दिखाया और कहा कि उस तरफ, तुमको आजादी की तरफ पहुंचना है - चाहे मरो चाहे कटो चाहे खून बहे - कुछ भी हो उसी भावना से आज हमें अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ना है। और मुझे मालूम है कि आप साथ देंगे तो कोई ऐसा काम नहीं है जो हम पूरा नहीं कर सकते हैं। कोई समस्या नहीं है जिसको समाधान नहीं कर सकते हैं। कोई खतरा नहीं है जिसका हम सामना नहीं कर सकते हैं। इसलिए मैं फिर से आप सबको दावत देती हूं कि हम सब मिल के उठें और आगे बढ़ें। हम गिर चुके हैं, शायद फिर भी गिरें। लेकिन गिर के हम उठेंगे, उठ के हम चलेंगे और मंजिल तक हम अवश्य पहुंचेंगे।

भाईयो और बहनों, मेरी फिर से यही आप से विनती है कि आज को न देखिये, आगे भविष्य को देखिये। भारत का भविष्य, आज का भविष्य उज्ज्वल है, चमकता है, कभी-कभी उस चमक से ही हमें शायद कभी पूरा दिखता नहीं है लेकिन हमें उसी तरफ बढ़ना है और भारत को बहुत ऊँचा उठना है। अब मेरे साथ मिल के तीन बार जय हिन्द बोलिएगा–

जय हिन्द, जय हिन्द , जय हिन्द.